INTERNATIONAL CONFERENCE ON RESEARCHES IN ENGINEERING, SCIENCE, TECHNOLOGY, MANAGEMENT AND HUMANITIES (ICRESTMH – 2024)

25TH AUGUST, 2024

CERTIFICATE NO : ICRESTMH /2024/C0824816

उत्तर प्रदेश में जल संसाधनों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

Kunvar Vishal Pratap Yadav

Research Scholar, Ph. D. in Geography
Dr. A.P.J. Abdul Kalam University, Indore, M.P., India.

सारांश

उत्तर प्रदेश में जलवायु परिवर्तन का जल संसाधनों पर व्यापक प्रभाव पड़ रहा है, जिससे सतही और भूमिगत जल स्रोतों की उपलब्धता और गुणवत्ता प्रभावित हो रही है। तापमान वृद्धि और अनियमित वर्षा के कारण जल चक्र में असंतुलन उत्पन्न हुआ है, जिससे नदियों, तालाबों और झीलों में जल स्तर घट रहा है। गंगा, यमुना और अन्य प्रमुख नदियों में जल प्रवाह में कमी देखी गई है, जिससे न केवल कृषि और पेयजल आपूर्ति प्रभावित हो रही है, बल्कि जैव विविधता पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। भूमिगत जल स्तर तेजी से गिर रहा है, विशेष रूप से पश्चिमी और मध्य उत्तर प्रदेश में, जहाँ अत्यधिक जल दोहन और कम वर्षा की वजह से जल संकट गहरा रहा है। बाढ़ और सूखे की बढ़ती घटनाओं से जल संसाधनों का असमान वितरण हो रहा है, जिससे ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में जल प्रबंधन की चुनौतियाँ बढ़ रही हैं। औद्योगिक और कृषि अपशिष्ट के कारण जल प्रदूषण भी बढ़ रहा है, जिससे पीने योग्य जल की उपलब्धता प्रभावित हो रही है। जल संरक्षण तकनीकों, कुशल जल प्रबंधन नीतियों और सतत जल उपयोग को बढ़ावा देकर जल संसाधनों को संरक्षित किया जा सकता है।